

## श्री इतवारी लाल (इतिहास विभाग) (बीए प्रथम वर्ष)

### फिरोज़ शाह तुगलक की जीवनी

#### सुल्तान

उनके पिता स्वर्गीय सुल्तान गियास-उद-दीन तुगलक के छोटे भाई रज्जब थे। उनकी मां पूर्व पंजाब के हिसार जिले के आधुनिक जिले अबोहर के एक छोटे राजपूत प्रमुख रण मल की बेटी थीं। उनका जन्म 1309 एडी में हुआ था।

उनका शासन 1351 से 1388 ई। तक लगभग 37 वर्षों तक चला। उनके शासन के दौरान, फिरोज तुगलक ने राजस्व सुधारों, सिंचाई कार्यों, धर्मार्थ कार्यक्रमों और सार्वजनिक कार्यों आदि जैसे उपायों को अपनाया, जिन्होंने विभिन्न तिमाहियों से प्रशंसा प्राप्त की।

#### राजस्व का आकलन

उसी समय, उनकी सैन्य अभियानों, दास प्रणाली, सामंती अभ्यास और धार्मिक नीति आदि ने उनके लिए बदनामी ला दी।

फिरोज तुगलक ने ख्वाजा हसन-उद-दीन को एक विशेष अधिकारी नियुक्त किया जो राज्य के सार्वजनिक राजस्व का एक अनुमान तैयार करता था।

इसके बाद उन्होंने राज्य में 'खालसा की भूमि (सरकारी भूमि) का राजस्व छह करोड़ पिच्चासी लाख टैंका (चांदी के सिक्के) तय किया।

#### नयी कर प्रणाली

खराज- यह भूमि कर था जो भूमि की उपज के दसवें हिस्से के बराबर था।

ज़कात ': यह मुसलमानों से प्राप्त संपत्ति पर ढाई प्रतिशत कर था और केवल विशिष्ट धार्मिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता था।

'खाम': यह पकड़े गए लूट का एक-पाँचवाँ हिस्सा था और चार-पाँचवाँ सैनिकों के लिए छोड़ दिया जाता था।

जजिया ': यह गैर-मुस्लिम विषयों, विशेषकर हिंदुओं पर लगाया गया था। हालांकि महिलाओं और बच्चों को करों से छूट दी गई थी।

#### सिंचाई कार्य

सबसे लंबी नहर एक थी जिसने जमुना नदी के पानी को हिसार शहर तक पहुँचाया। यह 150 मील लंबी थी।

सतलज नदी से घाघरा तक दूसरी नहर खींची गई। यह लगभग 100 मील लंबी थी।

तीसरी नहर मांडवी और सिरमुर पहाड़ियों से हांसी तक थी।

चौथी नहर घाघरा से फिरोजाबाद तक चली।

उल्लेखनीय कार्य

दीवान-ए-खेरात: मैरिज ब्यूरो ने गरीब माता-पिता को उनकी बेटियों की शादी के लिए अनुदान दिया। इसने गरीबों को आर्थिक मदद भी प्रदान की

दार-उल-शाफा ': अस्पतालों को महत्वपूर्ण शहरों में स्थापित किया गया था जहाँ दवाएँ मुफ्त दी जाती थीं।

सराये': लगभग 200 (विश्रामालय) सुल्तान द्वारा व्यापारियों के लाभ के लिए बनाए गए थे

पीड़ितों को अनुदान

कस्बे

उनके द्वारा स्थापित चार महत्वपूर्ण शहर फिरोजाबाद, फतेहाबाद, जौनपुर और हिसार फिरोजा थे। अशोक के दो स्तंभ दिल्ली में लाए गए थे- एक मेरठ से और दूसरा टोपरा, अर्नबाला जिले से और दिल्ली में बनाया गया था।

फिरोज तुगलक इतिहासकारों, कवियों और विद्वानों का एक महान संरक्षक था। वह स्वयं सीखने का व्यक्ति था और उसने अपनी जीवनी 'फतुहात-ए-फिरोजशाह' शीर्षक से लिखी थी। उन्होंने तीन कॉलेजों सहित तीस शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की।

ज़िया-उद-दीन बरानी ने 'फतवा-ए-जहाँदारी' लिखी और आफ़िफ़ ने अपना 'तारिख-ए-फ़िरोज़शाही' लिखा।

कुशल सेनापति नहीं

फिरोज तुगलक एक सक्षम सेनापति नहीं था। उसके द्वारा कोई महत्वपूर्ण विजय प्राप्त नहीं की गई थी।

"दक्षिणी राज्य सल्तनत से दूर चले गए थे और गुजरात और सिंध में विद्रोह हुए थे", जबकि "बंगाल ने अपनी स्वतंत्रता पर जोर दिया।" सुल्तान ने 1353 और 1358 में बंगाल के खिलाफ अभियान का नेतृत्व किया।

सुल्तान ने कटक पर कब्जा कर लिया, जगन्नाथ मंदिर, पुरी को नष्ट कर दिया और उड़ीसा के जाजनगर के राजा को श्रद्धांजलि देने के लिए मजबूर किया। उन्होंने कांगड़ा किले की घेराबंदी की और नगरकोट को श्रद्धांजलि देने के लिए मजबूर किया, और थट्टा के साथ भी ऐसा ही किया

धर्म

सुल्तान ने सेना में कई सुधार किए, जो नकारात्मक परिणाम उत्पन्न करते थे। यह गुलाम प्रणाली

बहुत हानिकारक साबित हुई और तुगलक साम्राज्य के पतन के सहयोगी कारकों में से एक बन गई। फ़िरोज़ ने हिंदुओं को इस्लाम में धर्मांतरण के लिए प्रोत्साहित किया। फ़िरोज़ दिल्ली का पहला सुल्तान था जिसने इस्लामी कानूनों और राज्य के प्रशासन में उलेमा की प्रमुखता को स्वीकार किया था

अंतिम दिन

फिरोज के बाद के वर्ष दुख से भरे रहे। उनके दो बेटों की मृत्यु हो गई थी और उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में अपने तीसरे बेटे, मुहम्मद खान को नामित किया था। सुल्तान अस्सी वर्ष की उम्र में पहुंच गया था और इसलिए, अपना मानसिक संतुलन खो चुका था।

राजकुमार मुहम्मद जिन्होंने कुछ समय के लिए सुल्तान के साथ सिंहासन की शक्ति को साझा किया था, एक सुख-साधक थे और इसलिए, प्रशासन की उपेक्षा की। कुछ रईसों ने राजकुमार के खिलाफ विद्रोह किया और सुल्तान पर कब्जा कर लिया। कुछ समय बाद, सितंबर 1388 में सुल्तान की मृत्यु हो गई।